Riverdale Fragrance

"Spreading the Fragrance of Knowledge."

॥ वृक्षो रक्षति रक्षितः ॥ ॥ पृथ्वी रक्षति रक्षिता ॥



New Beginnings & Earth Care

April 2026

- Learn & Grow
- Care for Our Planet
- Set New Goals

Riverdale Academy
burdenless education

Riverdale Fragrance

"Spreading the Fragrance of Knowledge."

INDEX

Cologne of Chairman	जिम्मेवारी प्रकृति की – शुरुआत शिक्षा की	Mr. Mahesh Patel	3
सुनो! सुनो! सुनो!	Important Announcement	Riverdale Academy	4
A New Thought	નવો ઉલ્લાસ, નવી ઉર્જા, નવી દિશા	Mr. Harikrushna Shastri	6
Administrator's Aspirations	नया सत्र – नए संकल्प	Miss. Sidhdhi Doctor	7
Picture Story	Mother Earth's Cry	Riverdale Academy	8
Student's Sentiments	The Assembly	Miss. Vishva Sabhaya	11
Life-inspiring poetry	हम स्वप्न सुनहरे लिखेंगे	Mrs. Sheetal Chaudhari	12
Teacher's Thoughts	Start Smart, Learn Better	Mrs. Prachi Chitte	13
One Voice	पृथ्वी बचाओ - सर्व धर्म संदेश	Mr. Mahesh Patel	14
जीवेत शरद: शतम् |	Famous Indian Personalities	Riverdale Academy	16
A New Step	Welcome to Mini Verse – The Kid's Universe	Riverdale Academy	18
सुनो! सुनो! सुनो!	Important Announcement	Mr. Mahesh Patel	19
Mini Verse – The Kid's Universe	Little Eye Detectives	Riverdale Academy	20
Mini Verse – The Kid's Universe	Find 8 Differences	Riverdale Academy	21
Mini Verse – The Kid's Universe	Guess the Emoji Words!	Riverdale Academy	22
Mini Verse – The Kid's Universe	Did you know?	Riverdale Academy	23
Inspire Tube	प्रकृति - संभाले प्रकृति, सँवारे भविष्य	Riverdale Academy	24
A Memories & Milestones	Glimpses of Month	Camera of Riverdale	25
School News	Upcoming Events & Holidays	Planner of Riverdale	26
Student's Sentiments	From Anxiety to Action	Miss Sneha Satwani	27
Achievement of School	Pride of Our Riverdalians	Announcing Area	28
Back Page Quote	The Final Reflection	Riverdale Fragrance	29
Shape Your Child's Future With Us	Open for Enrollment	Riverdale Academy	30

All articles, opinions, expressions, and comments published in this monthly magazine Riverdale Fragrance are the personal views of the respective authors. The school management or editorial board does not necessarily agree with or endorse these views.

Every effort has been made to ensure that the information provided in Riverdale Fragrance is accurate and useful. However, the school management and editorial board will not be responsible for any grammatical errors, mistakes, or inconsistencies. If any article, photograph, or content unintentionally hurts someone's sentiments, it is purely unintentional.

The sole purpose of publishing Riverdale Fragrance is to share educational, creative, and informational activities, and not to offend any individual, community, religion, institution, or ideology.



प्रिय विद्यार्थी मित्रों, सुज्ञ अभिभावश्री और आदर्श शिक्षकगण,

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है। यह मात्र पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं है, बल्कि जागरूक और जिम्मेवार नागरिकों का निर्माण करना है। आज जब प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है और वैश्विक ग्लोबल वोर्मींग (उष्मीकरण), जल-संकट तथा प्रदूषण जैसी समस्याएँ विश्वव्यापी रूप ले चुकी हैं, तब शिक्षा का प्रथम पाठ यह होना चाहिए कि प्रकृति के प्रति हमारा कर्तव्य क्या है।

महात्मा गांधीजी ने अत्यंत मार्मिक शब्दों में कहा था -

"पृथ्वी प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकता पूरी कर सकती है, लेकिन प्रत्येक मनुष्य के लालच को नहीं।"

यह सूक्ति सिखाती है कि संसाधनों का संयमित उपयोग और सहअस्तित्व का मार्ग ही मानवजाति के भविष्य को सुरक्षित रखता है।

शिक्षा और प्रकृति - एक अविभाज्य संबंध

विद्यालय की चारदीवारी के बाहर का प्राकृतिक संसार भी एक विशाल कक्षा है। जब एक बालक किसी वृक्ष को पानी देता है, तब वह केवल वनस्पति विज्ञान नहीं सीखता, बल्कि जिम्मेवारी, धैर्य और करुणा का भी पाठ पढ़ता है।

एक उदाहरण पर विचार करें तो - एक शिक्षकने अपने हर एक छात्र को एक एक पौधा दिया और कहा की आपको अपनी सोसायटी या अन्य कहीं सुरक्षित जगा पर उगाना है और नियमित उस पौधे को पानी डालना और संभाल रखना है और वह वृक्ष उसके नाम से जाना जाएगा। वर्षों बाद शहर हरित और सुसज्जित हो गया। विद्यार्थियों के लिए वह वृक्ष केवल एक पौधा नहीं रहा, बल्कि उनके विकास और संकल्प का प्रतिक बन गया। उसी दिन से उन्होंने समझ लिया कि संवेदनशीलता और संरक्षण ही वास्तविक शिक्षा है। यह उदाहरण हमें स्मरण कराता है कि जब शिक्षा और प्रकृति का समन्वय होता है, तब संस्कारों का वटवृक्ष विकसित होता है।

आज के युग में पर्यावरण संरक्षण केवल वैज्ञानिकों या सरकार की जिम्मेवारी नहीं है; यह प्रत्येक विद्यालय, प्रत्येक परिवार और प्रत्येक विद्यार्थी का कर्तव्य है।

स्वामी विवेकानंदजी ने कहा है : "उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको।"

इस वाक्य को पर्यावरण संरक्षण के संकल्प से जोड़ दें, तो प्रत्येक विद्यार्थी में प्रकृति रक्षा का दृढ़ निश्चय जागृत किया जा सकता है।

आइए, हम रीवरडेल एकेडमी परिवार के प्रत्येक सदस्य निम्नलिखित संकल्प लें -

- जल का अनावश्यक उपयोग नहीं करेंगे।
- प्लास्टिक-मुक्त समाज का निर्माण करेंगे।
- ऊर्जा संरक्षण के प्रति सजग रहेंगे।
- प्रत्येक वर्ष हमारे जन्मदिन पर कम से कम एक वृक्ष अवश्य लगाएँगे।

"जब हम प्रकृति की रक्षा करते हैं, तब प्रकृति हमारी रक्षा करती है।"

प्रकृति - जीवन की गुरु

भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माता के रूप में पूजनीय माना गया है। वेदों में भी पृथ्वी के लिए प्रार्थना की गई है -

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।" अर्थात् पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं।

जब यह भावना शिक्षा का अंग बन जाती है, तब पर्यावरण संरक्षण कोई कानून नहीं, बल्कि संस्कार बन जाता है।

नई शुरुआत - हरित विचार के साथ

रीवरडेल परिवार के लिए शिक्षा का अर्थ केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता नहीं, बल्कि मानवता और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता भी है। यदि हम सभी अपने जीवन में एक छोटा-सा हरित कदम उठाएँ, तो वही कदम समाज में व्यापक परिवर्तन का कारण बन सकता है।

रीवरडेल फ्रेग्रंस की महकती सुगंध यही संदेश देती है -

"प्रकृति की देखभाल ही भविष्य की देखभाल है।"

इसी विचार के साथ हम सभी शिक्षा के २०२६ के नए शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत एक हरित, स्वच्छ और संस्कारित भविष्य के निर्माण के संकल्प के साथ करें।

स्नेहाभिवादन सह,
श्री महेश पटेल
अध्यक्ष महोदय
रीवरडेल एकेडमी परिवार

Riverdale Fragrance

"Spreading the Fragrance of Knowledge."

Beloved Students, Respected Parents, Dear Alumni, Erudite Educators and our Well-Wishers,

The Academic Year 2026–27 marks a momentous milestone for the Riverdale Academy family, as we celebrate our Silver Jubilee Year with pride and gratitude. We are delighted to present the newly crafted Silver Jubilee Logo commemorating this historic occasion.



Riverdale Fragrance

"Spreading the Fragrance of Knowledge."

MESSAGE FOR THE SILVER JUBILEE YEAR - (2026–27)

Riverdale Academy is stepping into its 25th glorious year, and the academic session 2026–27 will be celebrated as the Silver Jubilee Year of the institution. This remarkable milestone marks a journey of dedication, learning, values, and the collective efforts of countless individuals who have contributed to the growth of the school.

On this special occasion, the school envisions a year filled with meaningful educational, cultural, and social activities that nurture knowledge, creativity, and character among our students. The Silver Jubilee celebrations will not merely be a commemoration of the past, but a vibrant opportunity to strengthen our commitment towards holistic education and social responsibility.

We warmly invite our beloved students, respected parents, alumni, and well-wishers to actively participate in the various academic and community-oriented initiatives that will be organized throughout the year. Your encouragement, cooperation, and thoughtful participation will greatly enrich these programs and help us extend the reach of education to the wider community.

It is our sincere hope that through these collective efforts, the spirit of learning will spread far and wide, inspiring young minds and contributing to the creation of a progressive, enlightened, and responsible society.

Let us come together to celebrate this significant milestone with pride, gratitude, and renewed enthusiasm, and continue our shared journey of knowledge, values, and excellence.

Riverdale Academy
Silver Jubilee Year – 2026–27

रीवरडेल एकेडमी अपने गौरवपूर्ण 25वें वर्ष में प्रवेश कर रही है और शैक्षणिक सत्र 2026–27 को विद्यालय का रजत जयंती वर्ष के रूप में मनाया जाएगा। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि समर्पण, ज्ञान, संस्कार और उन सभी लोगों के सामूहिक प्रयासों की प्रेरणादायी यात्रा का प्रतीक है, जिन्होंने विद्यालय के विकास और प्रगति में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

इस विशेष अवसर पर विद्यालय वर्षभर विभिन्न शैक्षणिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन करने जा रहा है, जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों में ज्ञान, सृजनशीलता और उत्तम चरित्र का विकास करना है। रजत जयंती समारोह केवल अतीत की उपलब्धियों का उत्सव नहीं है, बल्कि समग्र शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करने का एक सुअवसर भी है।

हम अपने प्रिय विद्यार्थियों, आदरणीय अभिभावकों, पूर्व विद्यार्थियों तथा सभी शुभचिंतकों से हार्दिक निवेदन करते हैं कि वे वर्षभर आयोजित होने वाले विभिन्न शैक्षणिक और सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेकर अपना सहयोग प्रदान करें। आपका सहयोग, मार्गदर्शन और सहभागिता इन कार्यक्रमों को और अधिक सार्थक एवं प्रभावी बनाएगी तथा शिक्षा के प्रकाश को समाज के व्यापक स्तर तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगी।

हमारी सच्ची कामना है कि इन सामूहिक प्रयासों के माध्यम से शिक्षा का प्रकाश दूर-दूर तक फैले, युवा पीढ़ी प्रेरित हो और एक प्रगतिशील, जागरूक और जिम्मेदार समाज के निर्माण में योगदान मिले।

आइए, हम सभी इस महत्वपूर्ण उपलब्धि का उत्सव गर्व, कृतज्ञता और नव उत्साह के साथ मनाएँ तथा ज्ञान, संस्कार और उत्कृष्टता की इस यात्रा को निरंतर आगे बढ़ाएँ।

रीवरडेल एकेडमी
रजत जयंती वर्ष – 2026–27



સૂર્ય રોજ ઊગે છે, પણ સવાર નવી હોય છે. માનવજીવન પણ આવું જ છે. પરિસ્થિતિઓ કદાચ જૂની હોય, સમસ્યાઓ પણ એ જ હોય, લોકો પણ ન બદલાયા હોય, પરંતુ જો મનમાં નવો ઉલ્લાસ હોય, કાર્યોમાં નવી ઊર્જા હોય અને સંકલ્પમાં નવી દિશા હોય તો જીવન સંપૂર્ણ બદલાઇ શકે છે.

આજનું વિદ્યાર્થી જીવન માત્ર પાઠ્યપુસ્તક પૂરતું સીમિત નથી. સ્પર્ધાઓ, ટેકનોલોજી, સોશિયલ મીડિયા, વાલી અને શિક્ષકગણની અપેક્ષાઓ — બધું જ ઝડપથી બદલાઇ રહ્યું છે. આવા સમયમાં જો વિદ્યાર્થી પાસે આંતરિક પ્રેરણા અને સકારાત્મકતા ન હોય તો તે ગૂંચવાય છે. તેવા સમયે નવો ઉલ્લાસ, નવી ઊર્જા, નવી દિશા-આ માત્ર સૂત્ર નથી રહેતું; તે જીવન જીવવાની એક પદ્ધતિ બની જાય છે.

૧.નવો ઉલ્લાસ – જીવનનું પ્રથમ સોપાન.

ઉલ્લાસ એટલે હર્ષથી ભર્યો ભર્યો મનોભાવ, જીવંતતા અને ઉત્સાહ. જો વિદ્યાર્થી ઉલ્લાસથી શાળામાં પ્રવેશે, તો તે માત્ર પાઠ નથી શીખતો, જીવન પણ શીખે છે.

એક જ વર્ગમાં બે વિદ્યાર્થીઓ હોય, ને એક ફરિયાદ કરે કે અભ્યાસ મુશ્કેલ છે; બીજો કહે કે પડકાર છે, એટલે જ મજા છે. તો બંને ભલેને એક જ પરિસ્થિતિમાં છે, પરંતુ પરિણામ બંનેના અલગ આવે છે. કારણ એટલું જ ઉલ્લાસથી સમસ્યાઓને સ્વીકારવાની અને તેની સામે બાથ ભીડવાની તૈયારી!

ભારતના મિસાઇલ મેન એ.પી.જે. અબ્દુલ કલામ જીવનમાં અતિ સામાન્ય પરિસ્થિતિમાંથી આગળ વધ્યા હતા. બાળપણમાં અખબાર પણ વેચ્યા ને ભણ્યા પણ ખરા. પણ મનનો ઉલ્લાસ અને સ્વપ્નો ક્યારેય કરમાવા દીધા નહીં. તેઓ કહેતા: "Dream is not that which you see while sleeping; it is something that does not let you sleep." આ ઉલ્લાસ જ તેમને રાષ્ટ્રપતિપદ સુધી લઇ ગયો. ઉલ્લાસ એ અંદરની ચિંગારી છે. તે પ્રગટે, તો જીવન અજવાસથી છલકાઇ જાય.

૨.નવી ઊર્જા – પ્રયત્નનો પ્રાણ.

ઉલ્લાસ વિચારોને જન્મ આપે છે, પરંતુ ઊર્જા તેને કાર્યમાં ફેરવે છે.

વિદ્યાર્થીઓ માટે ઊર્જા માત્ર શારીરિક શક્તિ નથી; તે માનસિક તાજગી, સકારાત્મકતા અને સતત પ્રયત્ન કરવાની તાકાત છે.

એક નાના ગામનો વિદ્યાર્થી રોજ પાંચ કિ.મી. ચાલીને શાળાએ જતો. મિત્રો પૂછતા: "થાકતો નથી?" તે હસીને કહેતો: "મારાં સ્વપ્નો મને આગળ ધપાવે છે." આ છે આંતરિક ઊર્જા!

આજના યુગમાં મોબાઇલ અને મનોરંજન ઊર્જાનો વ્યય વધારે કરે છે. પરંતુ વિદ્યાર્થી જો સમયનું સંચાલન શીખી જાય, નિયમિત વ્યાયામ કરે, ઉત્તમ પુસ્તકો વાંચે અને સકારાત્મક મિત્રોની સંગત રાખે — તો તેના હૃદય અને મનમાં સકારાત્મક ઊર્જાનો વિસ્ફોટ થાય છે.

સમાજ માટે પણ નવી ઊર્જા જરૂરી છે. જો યુવાનો સકારાત્મક પ્રવૃત્તિઓમાં જોડાય, સ્વચ્છતા અભિયાન, વૃક્ષારોપણ, વાંચન આંદોલન...જેનાથી સમાજમાં નવી ચેતના જાગે છે. વ્યક્તિગત ઊર્જા જ્યારે સામૂહિક બને ત્યારે એ રાષ્ટ્રની શક્તિ બની જાય છે.

૩.નવી દિશા – સફળતાનો માર્ગ.

ઉલ્લાસ અને ઊર્જા હોય, પણ દિશા ન હોય તો પ્રયત્નો વિખરાઇ જાય છે.

દિશા એટલે સ્પષ્ટ લક્ષ્ય, મૂલ્યઆધારિત વિચાર અને યોગ્ય માર્ગદર્શન.

ઘણા વિદ્યાર્થીઓ કહે છે "મારે શું બનવું, તે જ સમજાતું નથી." આ પ્રશ્નનો જવાબ બહાર નહીં, અંદર છે. તમને શું કરવું ગમે છે? કયા વિષયમાં આનંદ આવે છે? કઇ પ્રવૃત્તિમાં સમયનો ખ્યાલ પણ નથી રહેતો?

આ પ્રશ્નોના ઉત્તર તમારી દિશા બતાવે છે. દિશા માત્ર કારકિર્દી માટે નહીં, જીવનમૂલ્યો માટે પણ જરૂરી છે. સત્ય, શિસ્ત, મહેનત અને સંવાદિતા — આ મૂલ્યો દિશાદર્શક દીપક સમાન છે.

સતત માનવીય અભિગમ ધરાવતા વિશ્વપ્રસિદ્ધ અને સફળ ઉદ્યોગપતિ રતન ટાટાએ યોગ્ય દિશા હોવી તેને "સમાજ માટે જવાબદારી" કહી છે. તેઓ પણ એ જ રીતે વર્ત્યા અને તેથી જ અત્યંત આદરણીય પણ બન્યા.

૪. વિદ્યાર્થીથી સમાજ સુધી

વિદ્યાર્થીજીવનમાં જો આ ત્રણે વિકસે તો તે વ્યક્તિનું જ નહીં, પરિવાર અને સમાજનું પણ પરિવર્તન કરી શકે છે.

એક વિદ્યાર્થી તરીકે તમે સારા ગુણ લાવો છો, તો પરિવારને જ આનંદ આપો છો. જો તમે ઉમદા મૂલ્યો અપનાવો છો, સમાજને જ શાંતિ અને સુકૂન તરફ લઈ જાઓ છો. જો તમારો રાષ્ટ્રપ્રેમ સાચો છે તો સ્વ-અનુશાસનની જવાબદારી સાથે આદર્શ નાગરિક બનીને દેશનું ભવિષ્ય ઉજાગર કરો છો.

વિદ્યાર્થીઓ, તમે આવતીકાલના નાગરિક છો. જો તમે એ સ્વપ્નો જોયાં, યોગ્ય દિશા પસંદ કરીને તેની પાછળ પૂરી ઊર્જા અને ઉલ્લાસ દ્વારા પરિશ્રમ કર્યો તો તમારા પરિવાર સહિત ભારતનું ભવિષ્ય ઉજ્જવળ બનવામાં જરા પણ વાર નહીં લાગે.

આમ "નવો ઉલ્લાસ" આપણને હર્ષભર્યા મનથી આગળ વધવાનું શીખવે છે.
"નવી ઊર્જા" સતત પ્રયત્ન કરવાની શક્તિ આપે છે.
"નવી દિશા" જીવનને અર્થપૂર્ણ બનાવે છે.

ચાલો, આજે જ આપણે નિશ્ચય કરીએ - ફરિયાદ નહીં, પ્રેરણા! આળસ નહીં, કાર્યશીલતા! ગૂંચવણ નહીં, સ્પષ્ટ દિશા! કારણ કે, જેનામાં નવો ઉલ્લાસ છે, તેમની અંદર નવી ઊર્જા છે; અને જેમને નવી ઊર્જા છે, તેઓ જ વિશ્વને નવી દિશા આપી શકે છે.

આપણે સમાજના મૂલ્યવાન સભ્ય તરીકે આ ત્રિવેણીને જીવનમાં ઉતારીએ, અને પોતાને તથા રાષ્ટ્રને ઉજ્જવળ ભવિષ્ય તરફ દોરી જઈએ...

- શ્રી હરિકૃષ્ણભાઈ શાસ્ત્રી, શિક્ષણવિદ્, કટારલેખક, કવિ







1 अप्रैल 2026 से प्रारंभ हो रहा नवीन शैक्षणिक वर्ष 2026-27 हमारे जीवन में एक नई आशा, नया उत्साह और नए संकल्पों का संदेश लेकर आया है। प्रत्येक नया वर्ष अपने साथ संभावनाओं का विस्तृत आकाश लेकर आता है, जिसमें परिश्रम, अनुशासन और आत्मविश्वास के पंखों से उड़ान भरने का अवसर मिलता है।

आइए, हम सब सर्वप्रथम ईश्वर को नमन करें। उनकी कृपा, आशीर्वाद और मार्गदर्शन के बिना कोई भी शुभ कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। प्रभु से यही प्रार्थना है कि वे हमारे विद्यार्थियों को उत्तम बुद्धि, सद्विचार, उत्तम स्वास्थ्य और उज्ज्वल भविष्य प्रदान करें। उनका जीवन ज्ञान के प्रकाश से आलोकित हो तथा वे सदैव सत्य, परिश्रम और संस्कारों के मार्ग पर अग्रसर रहें।

नया शैक्षणिक वर्ष केवल कक्षा परिवर्तन का अवसर नहीं, बल्कि स्वयं को निखारने और नई ऊँचाइयों को प्राप्त करने का समय है। प्रत्येक विद्यार्थी को चाहिए कि वह बीते वर्ष की कमियों से सीख लेकर इस वर्ष नए लक्ष्य निर्धारित करे। नियमित अध्ययन, समय का सदुपयोग, शिक्षकों का सम्मान तथा माता-पिता की आज्ञा का पालन - ये सभी सफलता के आधार स्तंभ हैं।

प्रिय विद्यार्थियों,

नया वर्ष केवल कैलेंडर का परिवर्तन नहीं, बल्कि अपने विचारों, आदतों और लक्ष्यों को परिष्कृत करने का अवसर है। यह समय है -

- नई ऊर्जा के साथ पढ़ाई प्रारंभ करने का,
- अपने स्वप्नों को स्पष्ट रूप देने का,
- अनुशासन और समय-प्रबंधन को जीवन में उतारने का,
- और अपने व्यक्तित्व को निखारने का।

स्मरण रहे, सफलता अचानक प्राप्त नहीं होती; वह निरंतर परिश्रम, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का परिणाम होती है। कठिनाइयाँ जीवन की परीक्षा हैं, परंतु जो विद्यार्थी धैर्य और साहस से आगे बढ़ते हैं, वही अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं।

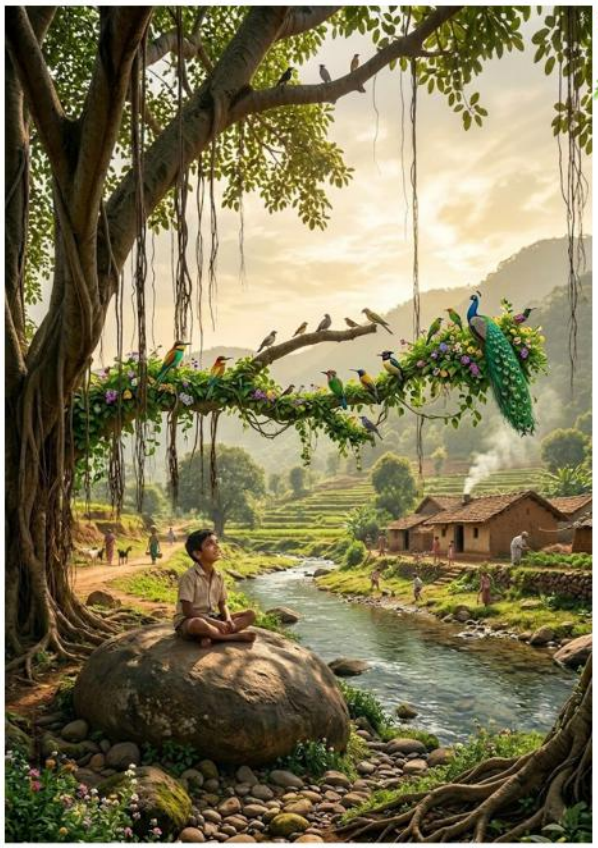
इस नवीन शैक्षणिक वर्ष में हम सभी यह संकल्प लें कि -

- हम प्रतिदिन कुछ नया सीखेंगे,
- अपने शिक्षकों का आदर करेंगे,
- विद्यालय के नियमों का पालन करेंगे,
- और अपने माता-पिता का गौरव बढ़ाएँगे।

आइए, ईश्वर का स्मरण कर, दृढ़ निश्चय और अटूट विश्वास के साथ इस नए शैक्षणिक वर्ष का शुभारंभ करें।

यह वर्ष आप सभी के जीवन में ज्ञान, संस्कार और सफलता का स्वर्णिम अध्याय सिद्ध हो - इसी मंगलकामना के साथ आप सभी विद्यार्थियों का हार्दिक स्वागत है।

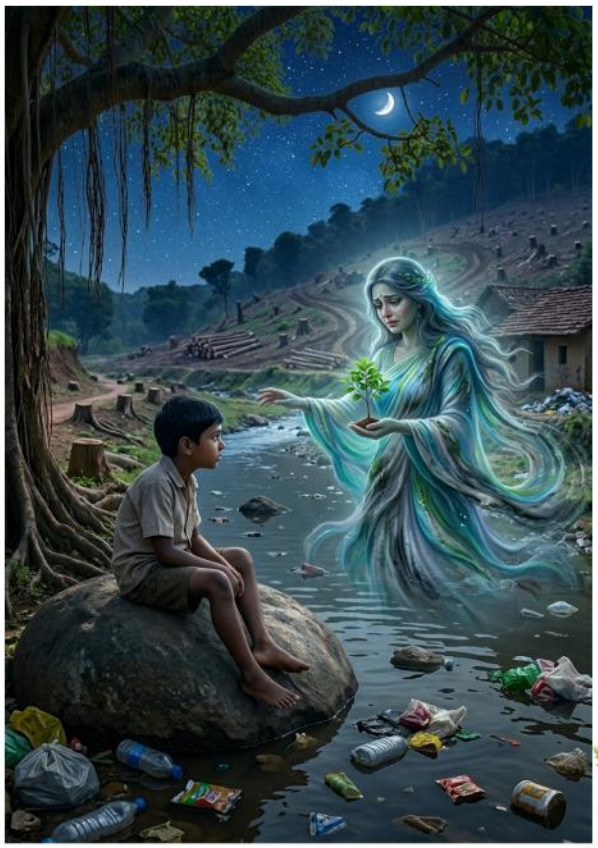
- कुमारी सिध्धि डॉक्टर, एडमिनिस्ट्रेटर, रीवरडेल एकेडमी



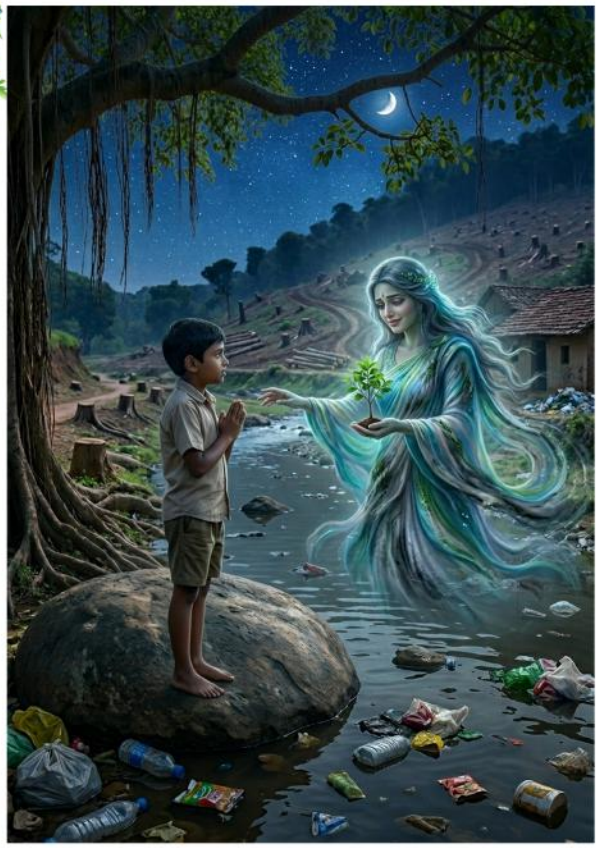
In a small village lived a little boy named Aarav. He loved nature very much. He enjoyed playing under the cool shade of trees, listening to the cheerful chirping of birds, and sitting peacefully by the riverbank.



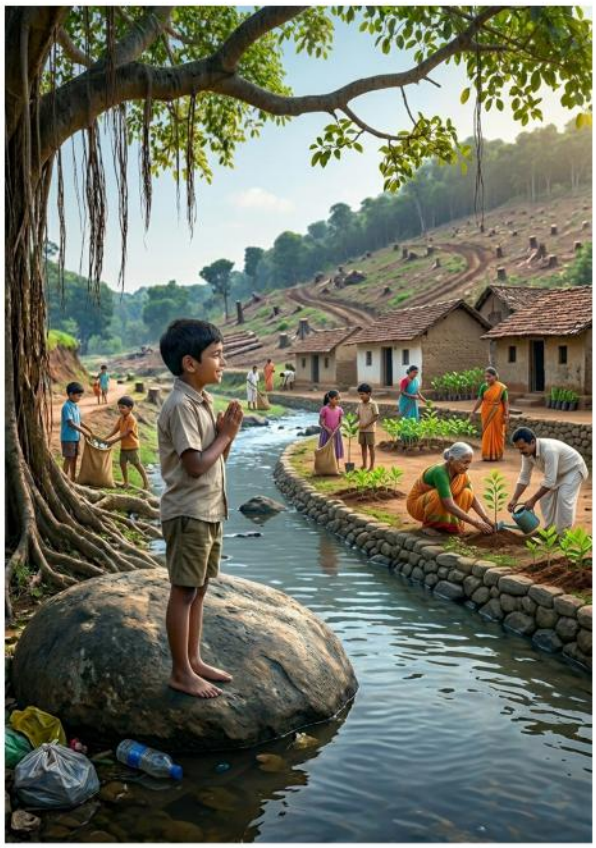
One day, Aarav noticed something very sad. Many trees near the village had been cut down. The river water had become dirty and garbage was scattered all around. Seeing this, Aarav felt deeply upset.



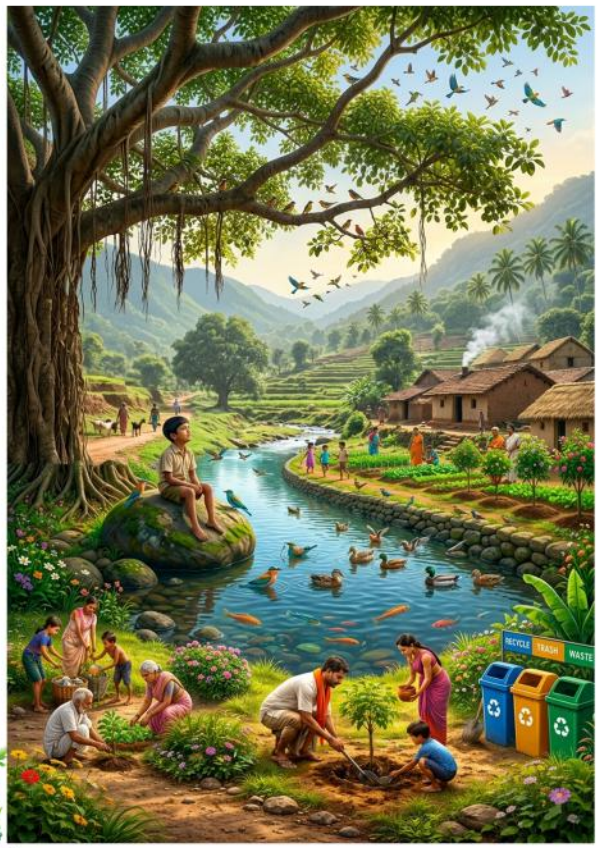
That night, feeling sad, Aarav went and sat quietly by the river. As he sat there, Mother Earth appeared before him from the flowing waters. Her face looked sorrowful. She gently said,
"My child, I give you pure air to breathe, clean water to drink and food to eat. But people are hurting me. They are cutting down trees and polluting the rivers. If this continues, life will become very difficult in the future."



With folded hands, Aarav replied,
"Mother, I promise that I will protect you and help others understand too."



The very next day, Aarav gathered his friends and the villagers. Together, they cleaned the village. They picked up garbage, spread awareness, and planted one sapling in front of every house.



After a few months, the village became green and beautiful again. The river flowed clean and clear. The sweet songs of birds filled the air once more. It felt as if Mother Earth herself was smiling.



From that day onward, everyone in the village took a pledge to protect the environment, plant trees and keep their surroundings clean.



RIVERDALE FRAGRANCE Say's - "The Earth is our Mother. If we protect her, she will bless us with happiness, peace and prosperity."
Let us all come together to save our Earth and build a beautiful future.





As the bell rings, school transforms. Students and teachers gather, turning a quiet ground into a vibrant gathering. It seems like a daily routine or something unwanted, but the morning assembly is actually the most important minutes of our day.

A Unified Start:

The assembly is the only time when entire school stands as one. When we recite prayers, it does not only freshen our mind but also makes/sets a positive tone for the rest of hours. After that when we recite the national anthem or the pledge, we are not doing it as individuals but as a whole (team).

Then it's time for the 'Thought of the day.' It is said that thoughts motivates human minds. It helps students to think more positive throughout the day and not to give up easily.

News helps to be informed about various things in our surroundings. It increases student's knowledge regarding nation and world.

Speech on any important topic not only increases speaker's confidence but also helps others to think different than others...



A stage for growth :

Beyond prayers, announcements, the assembly is a platform for talent. Students conducts assembly. It offers students a chance to find their own voice. It helps to increase self-confidence in students. Sometimes, an adult have stage fear due to lack of confidence.

Assembly is the place where student overcomes their stage fear and practice the discipline of listening, behaviour, etc. These are the skills that are just as vital as any textbook lesson.

Daily reset for mind :

In the rush of exams and classes, students becomes stressed. The assembly provides a moment of calm. Whether through brief prayers or a motivational addresses by the Principal. It allows us to centre our thoughts & to put more focus on goals. Assembly is a place where we celebrates our peer's successes, turning individual achievement into school wide inspiration.

The end :

Assembly of our school Riverdale Academy is the "morning spark" of our school life. It's a tradition that teaches us discipline, builds our confidence. At the end, mind becomes calm and reminds us every day that we are part of something bigger than ourselves...

- Miss Vishva Sabhaya (Studant, Grade - 11)

नव प्रभात की सुनहरी किरणें, ले आईं खुशियों का संदेश।
खुल गए फिर ज्ञान के द्वार, मिटे अज्ञान के सारे क्लेश।
नव सत्र की यह मधुर घड़ी, भर दे मन में नव उत्साह।
सपनों को आकार मिले अब, मिले सफलता की हर राह।
पेन्सिल की नोक में सपने सजें, रबर से भूलें मिट जाएँ।
किताबों की खुशबू संग-संग, नए विचार मन में आएँ।
कलम चले तो शब्द खिले, ज्ञान की ज्योति जगाए।
रूलर सी सीधी राह पकड़कर, जीवन आगे बढ़ जाए।
पुस्तक बने सच्ची सहेली, कलम बने विश्वास।
मेहनत हो अपनी पूँजी, और लक्ष्य पले हर श्वास।
स्कूल की घंटी मधुर बजे, उत्साह नया भर लाए।
मेहनत अपनी सच्ची साथी, सफलता पास बुलाए।
ईश्वर से यही प्रार्थना है, दे सबको बुद्धि और प्रकाश।
संस्कारों से जीवन महके, हो उज्ज्वल हर प्रयास।
आओ मिलकर वचन करें, हर दिन कुछ नया सीखेंगे।
नव सत्र की इस बेला में, हम स्वप्न सुनहरे लिखेंगे।
हम स्वप्न सुनहरे लिखेंगे।

श्रीमती शीतल चौधरी
प्रधानाचार्य,
रीवरडेल एकेडमी

हम स्वप्न सुनहरे लिखेगें।





Hello everyone,

The beginning of a new year is like sunrise after a long night quiet, hopeful and full of promise. For students, it is a gentle reminder that every day offers a fresh chance to grow smarter, stronger and more focused. Instead of making rushed resolutions, this is the time to pause, reflect and design a clear path forward. Think about what challenged you last year and what helped you succeed. Let your past experiences guide you not discourage you. When you set clear and realistic goals, your dreams slowly turn into plans and your plans turn into achievements.

Success in studies does not come from pressure or last-minute cramming; it grows from consistency and balance. A simple study routine, organized notes, and daily revision can transform confusion into confidence. At the same time, taking care of your health - sleeping well, eating properly, and giving your mind small breaks - keeps your energy strong. When your body and mind work together, learning becomes easier and more enjoyable.

As this new year unfolds, remember that you are writing your own academic story. There may be difficult chapters, but each one shapes your strength and character. Stay positive, stay disciplined, and believe in your ability to improve step by step. A successful year is not about being perfect - it is about choosing, every day, to become better than you were yesterday.

प्रसिद्ध संस्कृत सूक्ति हितोपदेश (पंचतंत्र) में लिखी इस पंक्ति हमें कहती है की।

"उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।"

(Udyamena hi siddhyanti kāryāṇi na manorathaiḥ.)

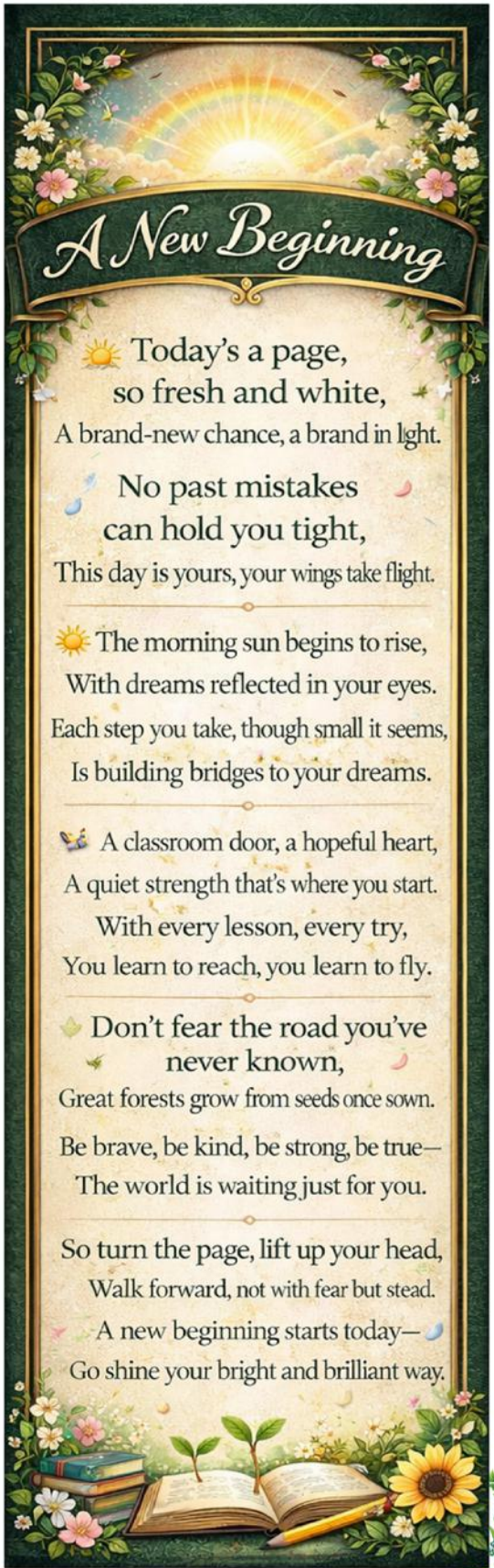
कार्यों की सिद्धि (सफलता) परिश्रम (उद्यम) से होती है, न कि इच्छा (मनोरथ) करने मात्र से। यह श्लोक हमें भाग्य के भरोसे रहने के बजाय, निरंतर प्रयास और कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करता है।

And our former President A. P. J. Abdul Kalam Sir also says that...

"Dream, dream, dream. Dreams transform into thoughts and thoughts result in action."

- Mrs. Prachi Chitte

M.Sc., B.Ed (Grade 1st to 5th Science, Social Science)





सर्वधर्म का प्रेरणादायक संदेश "पृथ्वी बचाओ"

आज पूरा विश्व पर्यावरण संकट से जूझ रहा है। बढ़ता प्रदूषण, कटते जंगल, सूखती नदियाँ और बदलता जलवायु संतुलन हमें चेतावनी दे रहे हैं कि यदि अब भी नहीं संभले, तो भविष्य अंधकारमय हो सकता है। लेकिन हमारी भारतीय संस्कृति और धर्मग्रंथों ने हजारों वर्ष पहले ही हमें प्रकृति संरक्षण का संदेश दे दिया था। विश्व के कोई भी धर्म और धर्मग्रन्थ का आप पठन करोगे तो एक आवाज तो निकलेगी ही "पृथ्वी बचाओ" ।

आज हम भारत में मने जाते मुख्य धर्म और उनके धर्मग्रन्थ कुछ अंश यहाँ रखते है।

❖ हिन्दू धर्म

हिन्दू धर्म का मुख्य शास्त्रों में से एक **श्रीमद् भगवद्गीता** में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं –

"अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्याद् अन्नसम्भवः ।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥" (अध्याय 3, श्लोक 14)

अर्थात् सभी प्राणी अन्न से जीवित रहते हैं, अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है, वर्षा यज्ञ से और यज्ञ अच्छे कर्मों से।

यह श्लोक हमें प्रकृति के चक्र का महत्व समझाता है। यदि हम अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे और प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखेंगे, तो वर्षा, अन्न और जीवन की धारा बनी रहेगी।

हमारे चार वेद में से एक **अथर्ववेद** के भूमि सूक्त में कहा गया है –

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"

अर्थात् पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। जैसे एक सच्चा पुत्र अपनी माता की रक्षा करता है, वैसे ही हमें पृथ्वी की रक्षा करनी चाहिए। यदि कोई अपनी ही माता को कष्ट पहुँचाए, तो वह कैसा पुत्र कहलाएगा?

तथापि **यजुर्वेद** में शांति मंत्र में प्रार्थना की गई है -

"ॐ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिः आपः शान्तिः ओषधयः शान्तिः..." (36.17)

यह मंत्र केवल मानव के लिए नहीं, बल्कि आकाश, पृथ्वी, जल और औषधियों के लिए भी शांति की कामना करता है। इससे स्पष्ट है कि हमारी संस्कृति सम्पूर्ण प्रकृति को एक परिवार मानती है।

इसी प्रकार **श्रीमद्भागवत महापुराण** में पृथ्वी को गौ माता के रूप में दर्शाया गया है, जिसकी रक्षा करना मानव का कर्तव्य है। श्रीमद्भागवत महापुराण (1.8.40) यहाँ प्रकृति को देवी सामान पूजनीय कहा गया है।

❖ बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म का मुख्य धर्मग्रन्थ **धम्मपद** है जिस में

सव्वे तसन्ति दण्डस्स, सव्वे भायन्ति मच्चुनो। अत्तानं उपमं कत्वा, न हनेय्य न घातये ॥ मूल पाली (Verse 129)
सब्बे तसन्ति दण्डस्स, सब्बेसं जीवितं पियं। अत्तनं उपमं कत्वा, न हनेय्य न घातये ॥ मूल पाली (Verse 130)

सरल अर्थ में कहें तो "सभी प्राणी दंड (पीड़ा) से डरते हैं; सभी को अपना जीवन प्रिय है। अपने को दूसरों के स्थान पर रखकर न किसी को मारना चाहिए, न किसी को कष्ट देना चाहिए।" यह शिक्षा करुणा (Compassion) और अहिंसा का मूल सिद्धांत बताती है। जब हम समझते हैं कि जैसे हमें जीवन प्रिय है, वैसे ही हर जीव को प्रिय है, है, तब हम हिंसा, क्रूरता और पर्यावरण विनाश से दूर रहते हैं। इसी भावना से प्रकृति और सभी जीवों की रक्षा करना बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण संदेश है।

❖ ख्रिस्ती धर्म

ख्रिस्ती धर्म के **बाइबल** में भी यही सन्देश है की

"The Lord God took the man and put him in the Garden of Eden to work it and take care of it." Bible (Old Testament - Genesis 2:15)

अर्थात् - भगवान ने पृथ्वी की रक्षा एवं संभाल रखने के लिए मनुष्य की रचना की है। इस वाक्य स्पष्टता करता है की मनुष्य को पृथ्वी पर शासन करने के लिए नहीं किन्तु, पृथ्वी की देखरेख रखने की जिम्मेवारी दी गई है। इसी लिए प्रकृति इश्वर की रचना है और इस की सार संभाल मानव का नैतिक कर्त्तव्य है।

❖ मुस्लिम धर्म

मुस्लिम धर्मग्रन्थ **कुरान शरीफ** में कहा है की,

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ

(सूरा अल-बकरा 2:11)

कुरान शरीफ की सूरह अल-बकरा (2:11) में पाखंडियों (मुनाफिकों) के आचरण का जिक्र है, जो धरती पर फसाद फैलाते हैं पर खुद को सुधारक समझते हैं। यह आयत अज्ञानता वश उपद्रव करने वालों को सचेत करती है। अर्थात् पृथ्वी पर विनाश, अयोग्यता न करना। कई लोग इन्हें सुधार के रूप में कहते है लेकिन खुदा की नजर से पृथ्वी पर अशांति फैलाना निंदनीय है। और

يَا بَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ

(सूरा अल-अराफ - 7:31)

"ऐ आदम की संतान! हर नमाज़ के समय अपना श्रृंगार (साफ-सुथरे कपड़े) करो; और खाओ-पियो, हद से ज़्यादा मत करो (फिजूलखर्ची न करो)। क्योंकि अल्लाह हद से ज़्यादा करने वालों को पसंद नहीं करता" ।

यह आयत संतुलित जीवन का उपदेश देता है मतलब की प्रकृति के संसाधनों का जवाबदारी पूर्वक उपयोग करना है। पर्यावरण संरक्षण की द्रष्टि में ये महत्वपूर्ण बात है।

❖ शिख धर्म

शिख धर्म के **श्री गुरु ग्रन्थ साहिब** में कहा है की,

ਪਵਣੁ ਗੁਰੂ ਪਾਣੀ ਪਿਤਾ ਮਾਤਾ ਧਰਤਿ ਮਹਤੁ ॥
ਰਿਹਮ ਗਡਿ ਸ੍ਰਿਸ੍ਟਿ ਰਾਸ੍ਟੀ ਰਾਸ੍ਟਿਭਾ ਖੇਲੈ ਸਗਲ ਨਾਡੁ ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 8)

मतलब की पवन (हवा) गुरु है, पानी पिता है, और धरती महान माता है। दिन और रात दो धाइयाँ (देखभाल करने वाली) हैं, जिनकी गोद में सारा जगत खेलता है। यह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के जपुजी साहिब की अंतिम पौड़ी का श्लोक है, जो प्रकृति और मानव के गहरे संबंध को दर्शाता है।

❖ जैन धर्म

आचारांग सूत्र जैन धर्म के आगमो में प्राचीन धर्मग्रन्थ में कहा है की **"अहिंसा और आत्मसमताः"**

इस सूत्र का मूल मंत्र है कि सभी जीवों को आत्मसमान समझें जैसे- पृथ्वीकायिक जीव को कष्ट होना उतना ही है जितना किसी विकलांग को अंगों के कटने से होता है। और

"सव्वे पाणो पियायरा: "

अर्थात् "सभी प्राणियों को अपने प्राण प्रिय हैं।" यह सिद्धांत सिखाता है कि जिस तरह हमें अपना जीवन और सुख प्यारा है, वैसे ही हर जीव (पशु-पक्षी, छोटे कीड़े-मकोड़े) को भी अपना जीवन प्यारा है और वे जीना चाहते हैं।

तत्त्वार्थसूत्र - 7.13 में भी **"अहिंसा संवरः"** कह कर यही बात दोहराई गई है।

एक गाँव में दो किसान रहते थे। पहला किसान हर वर्ष पेड़ लगाता, जल का संरक्षण करता और भूमि का सम्मान करता था। दूसरा किसान लालच में आकर अधिक लाभ के लिए पेड़ों को काटता और भूमि का शोषण करता था। कुछ वर्षों बाद पहले किसान की भूमि हरी-भरी रही, वर्षा भी समय पर हुई और उसका परिवार सुखी रहा। जबकि दूसरे किसान की भूमि बंजर हो गई और उसे संकट का सामना करना पड़ा। यह दृष्टांत हमें सिखाता है कि प्रकृति का सम्मान करने वाला ही सच्चा समृद्ध होता है।

हमारी परंपरा कहती है कि पृथ्वी माता है, जल देवता है, वायु जीवन है और वृक्ष हमारे मित्र हैं। **"पृथ्वी बचाओ"** केवल एक नारा नहीं, बल्कि हमारा धर्म और कर्तव्य है।

जब हम प्रकृति को बचाएँगे, तभी प्रकृति हमें बचाएगी। पृथ्वी की रक्षा ही मानवता की रक्षा है।

विश्व के सभी धर्मों का मूल संदेश एक ही है -

- पृथ्वी ईश्वर का उपहार है ।
- मनुष्य इसका रक्षक है ।
- प्रकृति का विनाश घोर अधर्म है ।

इसलिए, "पृथ्वी को बचाओ" किसी एक धर्म का मुद्दा नहीं है यह मानवता का एकजुट आध्यात्मिक संकल्प है।

आइए आज हम सब प्रतिज्ञा लें -

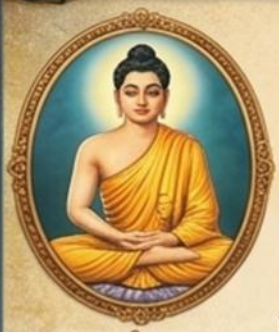
- अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें ।
- जल का संरक्षण करें ।
- प्रदूषण कम करें ।
- प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनें ।
- सर्व कुदरती संसाधनों का सीमित और जिम्मेदारीपूर्वक उपभोग करें ।

जब धर्म एकता का उपदेश देते हैं, तो आइए हम भी एकजुट होकर धरती माता की सेवा करें। पृथ्वी को बचाना ही सच्ची उपासना है।

1 APRIL

Famous Indian Personalities
April Birthdays

A Spiritual Personality





Lord Swaminarayan (3 April 1781 – 1 June 1830), also known as Sahajanand Swami, He was a yogi and ascetic believed by followers to be the highest manifestation of Purna Purushottama, around whom the Swaminarayan Sampradaya developed. He emphasized "moral, personal, and social betterment," and ahimsa. He is also remembered within the sect for undertaking reforms for women and the poor, and performing large-

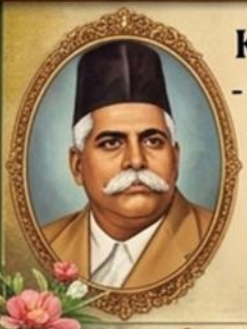


Lord Buddha - Siddhartha Gautama, most commonly referred to as the Buddha, was a wandering ascetic and religious teacher who lived in the eastern Indo-Gangetic Plains during the 6th or 5th century and founded Buddhism. According to Buddhist legends, he was born in Lumbini, in what is now Nepal. In many Japanese and other traditions, the birth of Buddha is celebrated on April 8.

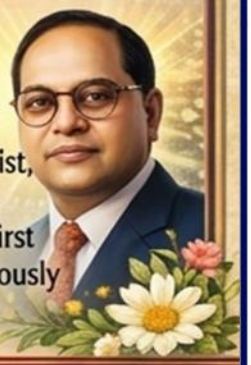
Gurū Nānak - (15 April 1469 – 22 September 1539; Gurmukhi), also known as Bābā Nānak, was an Indian spiritual teacher, mystic, and poet, who is regarded as the founder of Sikhism and is the first of the ten Sikh Gurus.

Apart from this, holy dates like Ram Navami (birth of Lord Ram) and Hanuman Jayanti, according to the Hindu calendar, also often fall in the month of April.

Social Reformers



Keshav Baliram Hedgewar - (1 April 1889 – 21 June 1940) was an Indian physician who founded the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS), a right-wing Hindutva organisation, in Nagpur in 1925.



Dr. B.R. Ambedkar -

- Known as the "Father of the Indian Constitution," he was a jurist, economist, and social reformer who inspired the Dalit movement. He served as India's first and Justice Minister and was posthumously awarded the Bharat Ratna in 1990.

Science & Technology





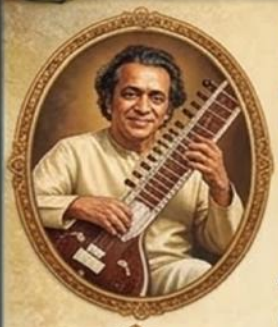
Ritu Karidhal Srivastava - (April 13, 1975)

- Often called the "Rocket Woman of India," she was the Deputy Operations Director for India's Mars Orbiter Mission (Mangalyaan) and served as the Mission Director for Chandrayaan-2.

1 APRIL

Famous Indian Personalities
April Birthdays

Art, Music, and Literature



Pandit Ravi Shankar - (April 7, 1920):
A sitar virtuoso who became the global face of Indian Classical Music. He won five Grammy awards and was was honored with the Bharat Ratna.





Arijit Singh - (April 25, 1987):
Currently one of the most celebrated playback singers in India, known for his versatile voice. He has won multiple National Film Awards and was conferred the Padma Shri in 2025.



Chetan Bhagat - (April 22, 1974):
A best-selling author whose novels (like Five Point Someone and 2 States) revolutionized the Indian publishing industry.

Hariharan Anantha Subramani - (Born 3 April 1955) is an Indian playback, bhajan and ghazal singer who predominantly sings in Hindi,

He has also sung over 15,000 notable songs in 10+ languages including Marathi, Sinhala, Maithili, Bhojpuri, Odia, Bengali, Sanskrit, Gujarati and English.

Sports



Sachin Tendulkar - (April 24, 1973):
Known as the "God of Cricket," he holds the record for the highest number of runs in both Test and ODI and is the only cricketer to hit 100 international centuries.

Rohit Sharma - (April 30, 1987):
Known as the "Hitman," he is the current captain of the Indian cricket team and the only player in the world to score three double centuries in ODIs.



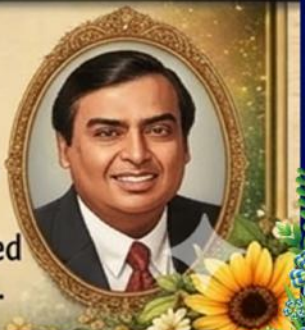
Film Industry



Ajay Devgn (2 April 1969)
Vishal Virender Devgan, known professionally as Ajay Devgn, is an Indian actor, film director and producer who works in Hindi films. He has appeared in over 100 films and has won numerous accolades, including four National Film Awards and four Filmfare Awards.

Business & Industry

Mukesh Ambani - (April 19, 1957):
The Chairman of Reliance Industries. He is credited with the "data revolution" in India through Jio, making high-speed internet accessible to millions.



Riverdale Fragrance

"Spreading the Fragrance of Knowledge."

Welcome

to



Riverdale Fragrance

"Spreading the Fragrance of Knowledge."



Dear Parents,

It gives us immense pleasure to introduce a special children's section in our E-magazine Riverdale Fragrance titled "Mini Verse – The Kids Universe." This section has been thoughtfully created to make learning joyful, creative, and meaningful for young minds.

In Mini Verse – The Kids Universe, children will find a delightful collection of stories, puzzles, riddles, poems, good habits and awareness activities, video links and many engaging tasks that combine fun with knowledge. Our aim is to nurture curiosity, imagination and positive values in children while making their learning experience exciting.

We sincerely encourage parents to explore this section together with their children. Your guidance and participation will make these activities more meaningful and enjoyable for them. By reading the stories, solving puzzles, watching the suggested videos, and completing the activities together, you can help your child develop creativity, thinking skills and good values.

We believe that when parents and children learn together, it creates a stronger bond and a richer learning environment at home.

Let us work together to make Mini Verse – The Kids Universe a joyful learning space where children can play, learn and grow with curiosity and confidence.

Warm regards,
Mr. Mahesh Patel, Chairman

प्रिय अभिभावकगण,

हमें यह बताते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे ई-मैगज़ीन Riverdale Fragrance में बच्चों के लिए एक विशेष नया विभाग "Mini Verse – The Kids Universe" प्रारंभ किया जा रहा है। यह विभाग छोटे बच्चों के लिए सीखने को आनंददायक, रचनात्मक और अर्थपूर्ण बनाने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

Mini Verse – The Kids Universe में बच्चों के लिए कहानियाँ, पहेलियाँ, जोड़-तोड़, कविताएँ, अच्छे-बुरे व्यवहार से जुड़ी जानकारी, वीडियो लिंक तथा अनेक रोचक गतिविधियाँ शामिल होंगी, जो बच्चों को मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान भी प्रदान करेंगी। हमारा उद्देश्य बच्चों में जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति और अच्छे संस्कारों का विकास करना है।

हम सभी अभिभावकों से विनम्र अनुरोध करते हैं कि वे इस विभाग का उपयोग अपने बच्चों के साथ मिलकर करें। आपकी मार्गदर्शन और सहभागिता इन गतिविधियों को बच्चों के लिए और अधिक अर्थपूर्ण तथा आनंददायक बनाएगी। कहानियाँ पढ़ते समय, पहेलियाँ हल करते समय, दिए गए वीडियो देखते समय और गतिविधियाँ करते समय यदि आप बच्चों के साथ रहेंगे तो उनकी रचनात्मकता, सोचने की क्षमता और अच्छे मूल्यों का विकास और बेहतर होगा।

हमारा विश्वास है कि जब अभिभावक और बच्चे साथ-साथ सीखते हैं, तो घर में सीखने का वातावरण और भी समृद्ध तथा सशक्त बनता है।

आइए, हम सभी मिलकर Mini Verse – The Kids Universe को बच्चों के लिए ऐसा आनंदमय मंच बनाएं जहाँ वे खेलते-खेलते सीखें, जिज्ञासा के साथ आगे बढ़ें और आत्मविश्वास के साथ विकसित हों।

सादर,
श्री, महेश पटेल, अध्यक्ष



Dear students, look carefully at this picture of the beautiful Riverdale Park and answer the questions:

1. What is the child in the red hat doing?
2. Where is the cat?
3. How many balloons are there?
4. What color is the ball?
5. How many animals are there?
6. How many birds are there?

Find 8 Differences





Guess the Emoji Words!

Recite the complete sentence.

1. The  and  go to  by  _____.

2. The  eats   and  _____.

3. The  runs in the  with a  _____.

4. The  rides a  on the  in the  _____.

5. The  drinks  and sleeps on  in the  _____.

6. The  sits on the  and sings  in the  _____.

7. The  swims in  with other  _____.

8. The  eat  together at  _____.

9. The  reads  and writes with a  in  _____.

10. The  is driving on the  _____.

11. The  and  are in the  _____.

12. The  walks in the  _____.

Write the Words!

Did You Know?

(Fun Facts)

1 Did you know?

Octopuses have **3 hearts!**



2 Did you know?

A giraffe's tongue can be as long as **45 cm!**



3 Did you know?

The **elephant** is the **largest** land animal on Earth!



4 Did you know?

Snails move very **slowly**—just a few meters in a day!



5 Did you know?

Butterflies taste with their **feet!**



5 Did you know?

Turtles can live for more than 100 years!



6 Did you know?

Owls can turn their heads almost **270°!**



7 Did you know?

Dolphins are very smart and love to play in the **water!**



8 Did you know?

Rainbows have **7 colors.**





9 Did you know?

Penguins can't fly but are **great swimmers!**



10 Did you know?

Sunflowers turn towards the **sun.**









प्रकृति बचाओ

बाल वार्ता





























Glimpses of the Month

A Memories & Milestones























Upcoming Events & Holidays

The new Academic Year 2026–27 for the CBSE Board has begun with new hopes and opportunities for learning and growth. Students are encouraged to start this session with enthusiasm, discipline, and a positive attitude.

The school will observe a holiday on 3rd April 2026 on the occasion of Good Friday, and Dr. B. R. Ambedkar Jayanti will be celebrated on 14th April 2026.

To promote creativity and overall development, the school will organize various activities such as Bagless Day, PTM, Funny Character Competition, Art & Craft Competition, Drawing and Colour Competition, and Fireless Healthy Food Making Competition.

A special Spring Season Celebration Week for Pre-Primary will be celebrated from 20th April 2026 to 25th April 2026, where little learners will enjoy fun and creative seasonal activities.

Lastly, we extend our best wishes to all GSEB Board students for their final examinations. Work hard, stay confident, and give your best. Success will surely follow.





"Eco-Anxiety is Real: How to Not Spiral While the World Is Melting"

I was sitting in the dining hall yesterday, staring at a plastic fork, and I just... lost it for a second. It sounds dramatic, I know. But between the record-breaking heatwaves and the constant news cycle about 2026 climate targets being missed, it's hard not to feel like we're just rearranging deck chairs on the Titanic while studying for a midterm on Monday.

That "eco-anxiety" thing? It's real. And it's exhausting. One thing I've realized in my environmental science elective is that we've been raised in a linear economy. It's a pretty simple and honestly, pretty unsustainable system: we extract resources, we make something (like that plastic fork), we use it for ten minutes, and then we chuck it into a landfill.

If we're going to actually "Save the Earth," we have to stop thinking in lines and start thinking in circles. A Circular Economy is the move. It's about designing systems where "waste" doesn't exist. Imagine if your phone was designed to be easily disassembled and upgraded instead of having "planned obsolescence" built-in so you have to buy a new one every two years. That's the shift we need moving from being "consumers" to being "stewards."

The Blame Game (And Why It's Rigged)

One of the biggest vibe-killers is the "Personal Carbon Footprint" guilt trip. Did you know the term was actually popularized by big oil companies in the early 2000s? It was a genius move to make us feel guilty about our lightbulbs while they continued to pump millions of tons of CO_2 into the atmosphere.

How to Actually Do Something Without Losing Your Mind

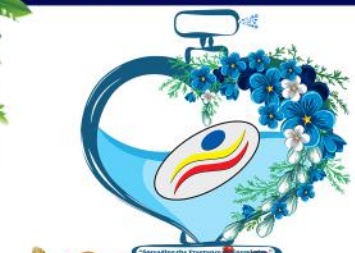
If you're feeling the "doom," here's how I'm trying to channel it lately:

1. Look for Micro-Wins: Start on campus or in your neighborhood. Can we get more compost bins? Can we push for a "thrift shop" for dorm gear so people don't just dump their stuff in May?
2. Unplug from the Doom-Scroll: Yes, things are bad. But staying glued to a screen watching the world burn isn't activism it's just stress.
3. Hold the Giants Accountable: Use your vote, use your social media, and use your voice. We're the most connected generation in history; let's make it inconvenient for companies to keep greenwashing us.

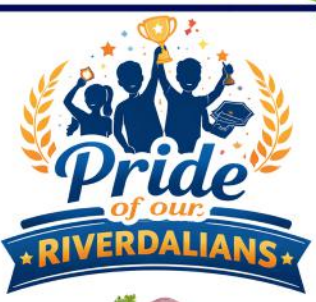
Thought of Riverdale Fregrance...

The Earth doesn't need us to be perfect. It needs us to be stubborn. We're the ones who are going to have to live with the consequences of today's decisions, so we might as well be the ones making the most noise. We don't have a backup planet, but we do have each other, and honestly, that's a pretty decent starting point.

Miss Sneha Satwani (Former student - 23/24)
2nd year BBA
BRCM College of Business Administration




Little Chefs
SALAD CHALLENGE


Pride of our
RIVERDALIANS




























The Art of
Storytelling

















The Final REFLECTION

April arrives like the first light of dawn gentle, hopeful, and filled with the promise of new beginnings. With the opening of a new academic year at Riverdale Academy, every classroom becomes a space of fresh ideas, every page of a notebook a canvas for dreams, and every student a traveler on a journey of discovery.

A new beginning is not merely the turning of a calendar page; it is an invitation to rise with renewed energy, to learn with curiosity, and to pursue excellence with courage and determination. Each step taken today each question asked, each effort made quietly shapes the leaders, thinkers, and change makers of tomorrow.

At the same time, April reminds us of something greater than ourselves. As we observe World Earth Day, we are gently called to reflect on our relationship with the planet that sustains us. The Earth is not just our home; it is our shared responsibility. Every small act of care planting a tree, conserving resources, respecting nature becomes a meaningful contribution to a greener and kinder world.

Let this year at Riverdale Academy be a journey where minds grow brighter, hearts grow kinder, and actions grow wiser. May our students move forward with confidence, guided by knowledge, inspired by values, and mindful of the Earth that nurtures all life.

For in every new beginning lies the power to shape a better future for ourselves, for our community, and for our planet.

Together, let us embrace New Beginnings and commit ourselves to Caring for the Earth, because the future we build today will shape the world of tomorrow.

We sincerely hope that this new initiative of Riverdale Academy, "Riverdale Fragrance" will be cherished by all and will serve as a source of inspiration.

The members of our Riverdale family will meet again in the next issue with fresh ideas and renewed enthusiasm.

Thank you so much,
Vande Mataram.
Mahesh Patel
Chairman, Riverdale Academy

Riverdale Fragrance

"Spreading the Fragrance of Knowledge."



Riverdale Academy®
SILVER JUBILEE 2001 to 2026

Riverdale Academy
burdenless education

Affiliated to CBSE, New Delhi. Aff. No.: 430593

CELEBRATING

25 Years
OF EXCELLENCE



ADMISSION
2026-27 OPEN

PRE-PRIMARY to GRADE 12th

CBSE / GSEB

SCIENCE - COMMERCE - HUMANITIES

WHY TO CHOOSE SCIENCE STREAM IN RIVERDALE ACADEMY?

- Strong Conceptual Teaching
- Regular Testing System
- One to One Mentorship to Each Student
- Board Exam Focused Preparation
- Fully Equipped Laboratories
- AC Classrooms
- Digital Teaching System
- 3 Types of Education System
- Daily Attendance and Progress Report In School App.





We are Offering EXCLUSIVE ADMISSION BENEFITS
for the 2026-27 Academic Year

L. P. SAVANI ROAD, BH. NIRMAL HOSPITAL, ADAJAN, SURAT - 9. 88498 63697